08/07/2021 B.A Subsidiary Paper II

परिवार के प्रकार (Kinds of family)

परिवार एक ऐसा सार्वभौमिक संगठन है जो सभी समाजों एवं समुदायों में पाया जाता है लेकिन इसके स्वरूप अथवा प्रकार विभिन्न समाजों में पृथक पृथक देखने देखने को मिलते हैं। फिर भी निम्नलिखित कुछ ऐसे प्रमुख आधार हैं जो परिवार के प्रमुख स्वरूपों या भेदों को स्पष्ट करने में सहायक होते हैं —

(1) अधिकार या सत्ता के आधार पर परिवार के प्रकार (Types of family on the Basis of Authority) प्रत्येक समाज में यह नियम पृथक-पृथक है कि किसके हाथ में सत्ता या अधिकार रहेगा। इस नियम के आधार पर परिवारों के निम्नलिखित प्रकार हैं —

(1) पितृसत्तात्मक परिवार (Patriarchal family) जिन परिवारों में पिता ही परिवार का प्रधान होता है, अर्थात जिन परिवारों की सत्ता पुरुष के हाथ में होती है, उसे पितृसत्तात्मक परिवार की संज्ञा दी जाती है। हिन्दू परिवार इसी प्रकार के परिवार के अन्तर्गत आते हैं।

(ii) मातृसत्तात्मक परिवार (Matriarchal family): इस प्रकार के परिवार को मातृसत्तात्मक इसलिए कहा जाता है कि इसमें पिता के स्थान पर माता की प्रधानता हो जाती है। भारत की नायर तथा मियां, आसाम की गारो, खासी तथा संथाल, अमेरिका की हुप इंडि तथा इरोक्वायस, रिलमओं और अफ्रीका की कुछ जातियों में मातृसत्तात्मक परिवार पाये जाते हैं।

2.) वंश के आधार पर परिवार के भेद (Kinds of family on the basis of Nomenclature) इसके भेद निम्नवत् हैं –

(i) मातृवंशीय परिवार (Matrilineal family) वे परिवार हैं जिनमें बच्चों का वंश परिचय या वंशनाम माता के परिवार के आधार पर चलता है। इस कारण बच्चे माता के वंश के समझे जाते हैं। मालाबार के नायरों में इस प्रकार के परिवार पाये जाते हैं।

(ii) पितृवंशीय परिवार (Patrilineal family) जिन परिवारों में वंश, परम्परा पिता के नाम से चलती है तथा जिनमें किसी पुरुष को पूर्वज माना जाता है।

इसे पितृवंशीय परिवार की संज्ञा दी जाती है। भारतीय हिन्दू परिवार इसी प्रकार के होते हैं।

(iii) उभयवाही परिवार - कुछ परिवार में वंश - परिचय वंशानुगत संबंध को महत्व प्रधान नहीं करते हैं बल्कि निकट के सम्बन्धियों के आधार पर निर्धारित होते हैं। ऐसे परिवार को उभयवाही परिवार की संज्ञा दी जाती है।

(iv) द्विनामी परिवार - इस प्रकार के परिवार होते हैं जिसमें माता - पिता दोनों का ही वंश - नाम परम्परागत रूप से एक साथ चलता है। इसलिए इसे द्विनामी परिवार कहा जाता है।

(घ) उत्तराधिकार के आधार पर विभिन्न प्रकार के परिवार (Various types of family on the basis of Inheritance) - उत्तराधिकार के आधार पर परिवार के दो प्रमुख प्रकार होते हैं -

(i) पितृमार्गी परिवार - इस प्रकार के परिवार होते हैं जिनमें सामाजिक पारिवारिक पद उपाधियाँ तथा सम्पत्ति पर पूर्ण अधिकार पिता का ही होता है। पिता के मरने के बाद पुत्र ही सम्पूर्ण का अधिकारी होता है। हिन्दू परिवार इस प्रकार का उत्तम उदाहरण है।

(ii) मातृमार्गी परिवार - इस प्रकार के परिवार होते हैं जिनमें सम्पत्ति संबंधी सभी अधिकार माता के अन्तर्गत होते हैं।

यद्यपि इसका मतलब यह कदापि नहीं होता है कि सम्पत्ति अधिकार केवल स्त्रियों को ही उपलब्ध है, लड़कों को कुछ भी नहीं प्राप्त होता। वास्तविकता तो यह है कि दोनों अधिकारी होते हैं।

(5) आवास के आधार पर परिवार के रूप (Forms of family on the basis of Residence) :-

(i) पितृस्थानीय परिवार (Patrilocal Residence) पितृस्थानीय परिवार उन परिवारों को कहा जाता है जिनमें विवाहोपरान्त स्त्री पुरुष के घर जाकर रहती है। भारतीय हिन्दू परिवार तथा खरिया, भील आदि जनजातियों में पितृस्थानीय परिवार पाये जाते हैं।

(ii) मातृस्थानीय परिवार (Matrilocal Residence) इसके अन्तर्गत विवाहोपरान्त पुरुष स्त्री के घर जाकर निवास करता है। इस प्रकार के परिवार खासी, गारो तथा मालाबार के नायरों में बहुतायत में प्राप्त होते हैं।

(iii) नवस्थानीय परिवार - आजकल ऐसा होता है कि नवीन परिस्थितियों के अन्तर्गत विवाहोपरान्त पति-पत्नी अपना एक पृथक परिवार बसा लेता है।

परिवार की सदस्य संख्या के आधार पर परिवार (families on the basis of number of family Member) - इसके आधार पर परिवार के निम्न तीन प्रकार हो सकते हैं-

(i) मूल या केन्द्रीय परिवार (Primary or Nuclear family) - यह परिवार का सबसे छोटा रूप होता है। इसके अन्तर्गत एक विवाहित पति-पत्नी और उनके अविवाहित बच्चे ही सम्मिलित होते हैं। आधुनिक काल में इसी प्रकार के परिवारों का अधिक प्रचलन है।

(ii) विवाह संबंधी परिवार (Consugal family) - इस प्रकार के परिवार के सदस्यों में पति-पत्नी और उनके अविवाहित बच्चों के साथ विवाह द्वारा हुए कुछ दूसरे संबंधी आ जाते हैं।

(iii) संयुक्त परिवार (Joint family) - जिस परिवार में एक वंश के समस्त भाई, उनकी पत्नियाँ, लड़के, बच्चे उनकी बहनें उनके माता-पिता इत्यादि रहते हों तथा जिसके ऊपर का एक बुजुर्ग व्यक्ति मालिक होता है उस परिवार को संयुक्त परिवार कहते हैं।

(6) विवाह संबंध के आधार पर परिवार के प्रकार (Types of family on the basis of Marriage Relation)

- विवाह संबंध के आधार पर परिवार के दो मुख्य रूपों को प्रस्तुत किया जा रहा है —

(i) एक विवाही परिवार
(Monogamous Family)

(ii) बहु विवाही परिवार
(Polygamous Family)

Vijant Kumar Mishra
Asst Professor (Guest Faculty)
Dept of sociology
Date - 08/07/2021